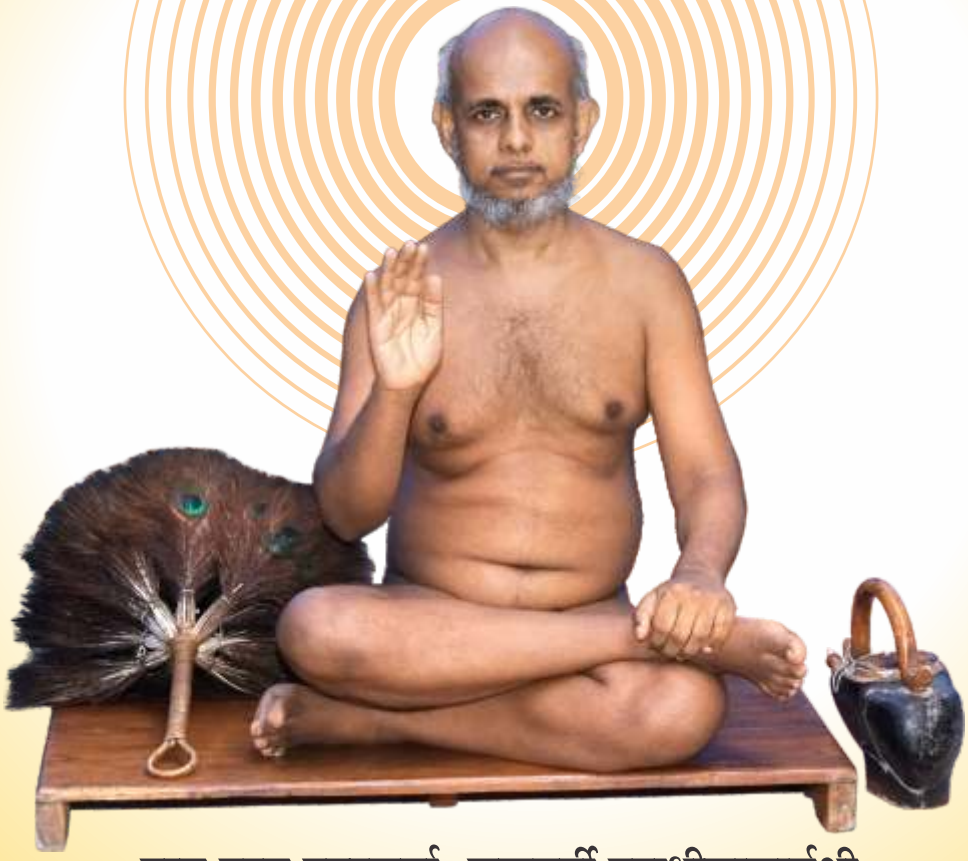

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

श्री चन्द्रप्रभ विधान

रचनाकार
मुनिश्री सुव्रतसागर जी महाराज

प्रकाशक : धर्म प्रभावना सदन, सागर (मध्यप्रदेश)

(परम्परानायक)

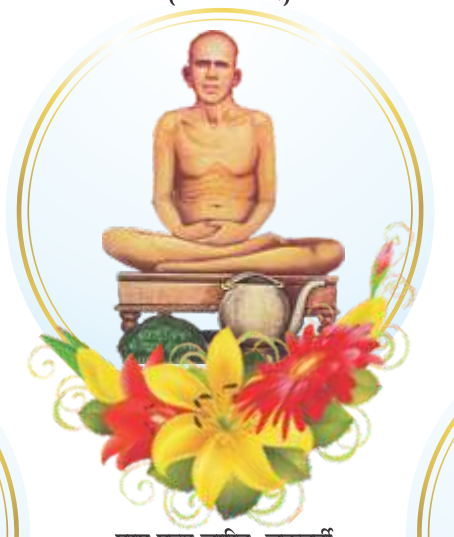

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

श्री चन्द्रप्रभ विधान

रचयिता - मुनि 108 श्री सुव्रत सागर जी महाराज

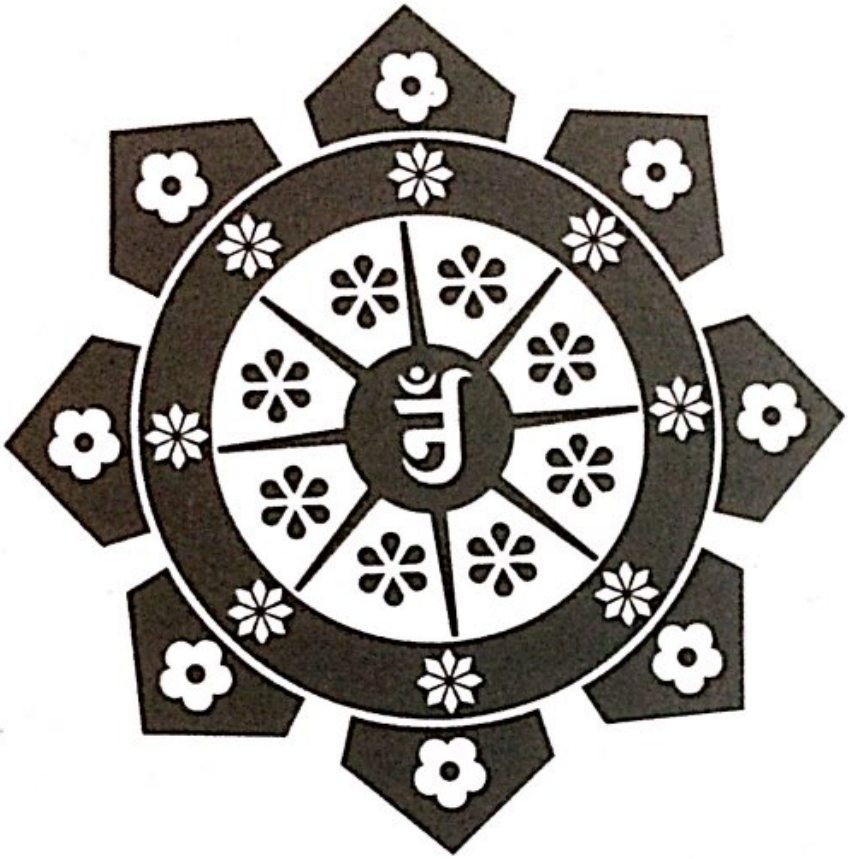

संकलन/ संपादन

प्रदीप सागर

धर्म

प्रभावना सदन,

पटैल, मार्केट, लिंक रोड, सागर (म.प्र.)

मो. 09406920173, 09827235123

मूल्य-15/- रु.

धर्म
प्रभावना सदन

जैन साहित्य,पूजा के वर्तन, मंगल कलश
चार्तुमास मंगल कलश, छत्र, चवर, भाव मंडल
अष्ट प्रतिहारी, पांडुक शिला, सिंहासन, झंडा,
सम्मान पट्‌टी, सम्मान प्रतीक चिन्ह, यंत्र, जाप माला,
माड़ने जैन, भजन, सी.डी., फोटो
आदि के थोक एवं फुटकर विक्रेता

नोट – सभी प्रकार के जैन साहित्य छपवाने हेतु संपर्क करें ।

छोटे बड़े विधान एवं सभी प्रकार का जैन धार्मिक साहित्य, जैन धार्मिक सामग्री घर बैठे प्राप्त करने के लिये संपर्क करें ।

संपर्क सूत्र

मो. 09406920173, 09827235123
प्रो. – प्रदीप सागर

बैंक खाता
Pradeep Jain - SBI A/c. No. 30042053948

भजन

(लय :आत्मशक्ति से ओतप्रोत)

चंदा जैसा रंग है तेरा, चंदा जैसा नाम ।
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम ॥

महासेन के राज दुलारे, लक्ष्मीमति के लाल ।
स्वर्गधाम से भू पर आये, हरते जग जंजाल ॥
हमको निज की निधियाँ देकर, कर दो मालामाल ।
पूज्य तुम्हीं हो भगवन् प्यारे, साँचे तीरथ धाम ॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम ॥

तुमको यह दुनियाँ ना भायी, भायी मुक्ति नार ।
उससे चले स्वयंवर रचने, चले मोक्ष के द्वार ॥
एक तुम्हीं हो दूल्हे उसके, बाराती संसार ॥
हमको भी प्रभु शामिल करके, ले चलिए शिवधाम ॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम ॥

जिसके दिल में तुम वसते वो, चले मोक्ष की ओर ।
हृदय हमारे कब आओगे, प्यारे चाँद चकोर ॥
तारण तरण जहाज तुम्हीं हो, थामो सबकी डोर ।
अर्जी सुन के शुद्ध बना दो, अपनी आतमराम ॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम ॥

तुम बिन कोई नहीं हमारा, ठुकराओ ना नाथ ।
हम हैं भूले भटके स्वामी, रख लो अपने साथ ॥
समाधिमरण को मुक्तिवरण को, सिर पर रख दो हाथ ।
'सुव्रत' के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम ॥

श्री चन्द्रप्रभ विधान

जय बोलिये

चन्द्रपुरी के छोरे,
सकल परिग्रह छोड़े,
चैतन्य चन्द्रोदय के चाँद चकोरे,
प्रभु जी गोरे–गोरे,
चाँद सितारे जिन्हें देखकर शर्मायें,
जिनकी भक्ति को सब सिर झुकायें
ऐसे परमपूज्य
श्री चन्द्रप्रभ भगवान् की जय ।।

चन्द्रप्रभ जिन

चन्द्रप्रभो दयोऽजेयो विचित्रेऽभात्कुमण्डले ।
रुन्द्रशोभोऽक्षयोमेयो रुचिरे भानुमण्डले ॥1॥

प्रकाशयन् खमूद्भूतस्त्वमुद्घांककलालयः ।
विकासयन् समुदभूतः कुमुदं कमलाप्रियः॥2॥

यत्तु खेदकरं ध्वान्तं सहस्रगुरपारयन् ।
भेत्तुं तदन्तरत्यन्तं सहसे गुरु पारयन् ॥4॥

खलोलूकस्य गोव्रातस्तमस्ताप्यति भास्वतः ।
कालोविकलगोघातः समयोप्यस्य भास्वतः ॥5॥

लोकत्रयमहामेयकमलाकरभास्वते ।
एकप्रियसहायाय नम एकस्वभाव ते ॥6॥

चारुश्रीशुभदौ नौमि रुचा वृद्धौ प्रपावनौ ।
श्रीवृद्धौतौ शिवौ पादौ शुद्धौ तव शशिप्रभ ॥7॥

महाकवि आचार्य श्री विद्यासागर कृत पद्यानुवाद–

चन्द्रप्रभ– स्तवन

(स्वयंभू–स्तोत्र से)

अपर चन्द्र हो अनुपम जग में जगमग जगमग दमक रहे।
चन्द्र–प्रभा सम नयन–मनोहर गौर वर्ण से चमक रहे ॥
जीते निज के कषाय –बंधन बने तभी प्रभु जिनवर हो।
चन्द्रप्रभो! मम नमन तुम्हें सुरपति नमते ऋषिवर हो ॥1॥

परम ध्यानमय दीपक उर में जला आत्म को जगा दिया।
मोह–तिमिर को मानस–तल से पूर्ण रूप से भगा दिया ॥
हे प्रभु! तव तन की श्री छवि से बाह्य, सघनतम दूर भगा।
दिनकर को लख, तम ज्यों भगता, पूरब में द्युति–पूर उगा ॥2॥

पूरे भीगे कपोल जिनके मद से गज गण मद –धारे।
सिंह–गर्जना सुनते, डरते, बनते ज्यों निर्मद सारे ॥
निजमत स्थिति से पूर्ण मत्त हो प्रतिवादी त्यों अभिमानी।
स्याद्वाद तव सिंहनाद सुन बनते वे पानी–पानी ॥3॥

तपः साधना अद्भूत करके हित– उपदेशक आप्त हुए।
परम इष्ट पद को तुम प्रभुवर त्रिभुवन में जब प्राप्त हुए।।
अनन्त सुख के धाम बने हो विश्व–विज्ञ अविनश्वर हो।
जग–दुख–नाशक शासक के ही शासक तारक ईश्वर हो।।4।।

भगवन् तुम शशि, भव्य कुमुद ये खिलते हैं दृग खोल रहे।
राग–रोष मय मेघ तुम्हारे चेतन में नहिं डोल रहे ।।
स्याद्वाद मय विशद वचन की मणिमय माला पहने हो।
परमपूत हो, पावन कर दो, मम मन वश में रहने दो ।।5।।

दोहा

चन्द्र कलंकित किन्तु हो, चन्द्रप्रभु अकलंक ।
वह तो शंकित केतु से, शंकर तुम निःशंक ।।1।।
रंक बना हूँ मम अतः मेटो मन का पंक ।
जाप जपूँ जिन– नाम का, बैठ सदा पर्यंक ।।2।।

समन्तभद्र की भद्रता

श्रीचंद्रप्रभ विधान

स्थापना

(दोहा)

चन्द्रप्रभु का नाम ही, हरे कष्ट सब पाप ।
दर्शन पूजन से मिले, सब कुछ अपने आप ।।

(ज्ञानोदय)

जो इस जग में स्वयं शुद्ध हैं, सबको शुद्ध बनाते हैं ।
जिनके दर्शन भक्तजनों को, सुख की राह बताते हैं ।।
ताराओं से घिरा चाँद भी, जिनके दर्शन को तरसे ।
ऐसे चन्द्रप्रभु को हम तो, आज पूजकर हैं हरषे ।।

नाथ ! आपके जगह–जगह पर, चमत्कार हैं अतिशय हैं।
भक्त मुक्ति सुख शांति सम्पदा, पाते कर्मों पर जय हैं ।।
यही प्रार्थना यही भावना, धर्मामृत, बरसाओ–ना ।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, हृदय हमारे आओ ना ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् इति आह्वानम् ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(पुष्पांजलिं...)

बचपन खोया खेल–खेल में, गयी जवानी भोगों में ।
देख बुढ़ापा फक्–फक् रोते, जीवन गुजरा रोगों में ।।
रोगों से छुटकारा मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से ।
जनम मरण आदिक दुख नशते, प्रासुक जल के अर्पण से ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

चारु चन्द्र की किरणें चंदन, हिमकण जल की शीतलता ।
भव संताप मिटे न इनसे, मुरझाती है जीव लता ।।
तन–मन भव–संताप दूर हो, चन्द्रप्रभु की पूजन से ।
देह सुगन्धित बने मनोहर, शुभ चन्दन के अर्पण से ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदन...।

जग पद पैसा नाम प्रतिष्ठा, ये ही संकट विकट रहे ।
रूप दिगम्बर किसे सुहाता, जीव इसी बिन भटक रहे ।।
पद आपदा हर्त्ता पद मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से ।
सुख सम्पत्ती अक्षय मिलते, अखण्ड अक्षत अर्पण से ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् .....।

राम लखन सीता आदिक जो, ब्रह्मचर्य धर सुखी रहे ।
ब्रह्मचर्य जो धर न सके वो, रावण जैसा दुखी रहे ।।
इन्द्रिय जय कर प्रभु बन जाते, चन्द्रप्रभु की पूजन से ।
माला जैसे खिलके महको, दिव्य पुष्प के अर्पण से ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं....।

जिनकी भूख नींद रूठी वे, महा दुखी इंसान रहे ।
जिनकी भूख नींद मिटती वे, महा पूज्य भगवान् रहे ।।
भूख नींद आदिक दुख नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से ।
स्वर्गों का साम्राज्य प्राप्त हो, ये नैवेद्य समर्पण से ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविध्वंसनाय नैवेद्यं....।

यदि श्रद्धा विश्वास अटल हो, तो रत्नों के दीप जलें ।
राहु–केतु शनि फिर भय खाते, सूर्य चाँद भी पूज चलें ।।
मिले दीप यों मोह हरण को, चन्द्रप्रभु की पूजन से ।
काय–कांति भी अद्भुत बढ़ती, दीपक द्वारा अर्चन से ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविध्वंसनाय दीपं....।

धुआँ–धुआँ जब चले सूर्य तो, ताप रोशनी मिले नहीं ।
धुआँ–धुआँ जीवन जलता तो, कर्मों का वन जले नहीं ।।
अष्ट कर्म का भव –वन जलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से ।
फिर सौभाग्य सूर्य भी चमके, धूप सुगंधी अर्पण से ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं....।

भोग भोगकर धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे ।
दुनियाँ के फल– फूल विषैले, गजब कर्म संयोग रहे ।।
जहर भोग विषयों के नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से ।
मनोकामना पूरी होती, प्रासुक फल के अर्पण से ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आये हम ।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाये हम ।।
अष्टम् वसुधा मिलती, अष्टम–चन्द्रप्रभु की पूजन से ।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़ ।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आये चन्द्र चकोर ।।

ॐ ह्रींचैत्रकृष्णपंचम्यांगर्भमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रायअर्घ्यं.।

ग्यारस कृष्ण पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश ।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किये सुरेश ।।

ॐ ह्रींपौषकृष्णएकादश्यांजन्ममङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रायअर्घ्यं.।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार ।
मुनि बनकर तप से सजे, जय –जय बारंबार ।।

ॐ ह्रींपौषकृष्ण–एकादश्यातपोमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रायअर्घ्यं.।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ ।।

ॐ ह्रींफाल्गुनकृष्णसप्तम्यांकेवलज्ञानमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

सम्मेदाचल से गये, मोक्ष महल के धाम ।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां केवलमोक्षमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

जयमाला

(दोहा)

चन्द्रप्रभु भगवान् के, गुण–गण जग विख्यात ।
जयमाला के नाम हम, कहते अपनी बात ।।

(ज्ञानोदय)

महासेन नृप लक्ष्मणा के, राज कुँवर चंदा स्वामी ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र चकोरे, चित्त चोर अंतरयामी ।।

चाँदी–चाँदी सबकी करते, चाँदी जैसे चमक रहे ।
तभी भक्त चाँदी सोना ले, चन्द्र चरण में चहक रहे ।।1।।

चारु चन्द्र की चमक चाँदनी, चंदन उनको रुचते क्या?।
जिनने दर्शन किये आपके, सूर्य चाँद वे भजते क्या?।।
चकनाचूर हुयी चंचलता, चन्द्रप्रभु की चर्चा से ।
चूर–चूर अभिमान हुआ फिर, नाथ! आपकी अर्चा से ।।2।।

अर्चा करना भूल गये हम, फँसकर दुनियाँदारी में ।
तभी हमारी किस्मत फूटी, यारी रिश्तेदारी में ।।
हमने जिसको सगा समझ के, अपना सब कुछ सौंपा है।
दगाबाज बन उस प्राणी ने, छुरा पीठ में घौंपा है ।।3।।

समझ हितैषी जिस मानव को, भगवन् जैसा पूजा है ।
मतलब निकला तो उसका मुँह, हमें देखकर सूजा है ।।
जिन्हें बात करना सिखलाये, वही हमें फटकार रहे ।
जिन्हें पिलाया अमृत हमने, वही जहर दे मार रहे ।।4 ।।

फूल माल जिनको पहनायी, बने गले का वे फंदा ।
जिनको रत्नों सा चमकाये, वे हमको कहते गंदा ।।
नाथ! बात हम कहें कहाँ तक, अपनी करुण कहानी की।
हुआ हमारा जीवन ऐसा, ओस बूँद ज्यों पानी की ।।5।।

ये नशने से बच जाता है, नाम आपका सुनकर के ।
फिर भी चन्दा ग्रह में बाँधे, लोग सोम दिन चुनकर के।।
समंतभद्र की सुनकर भक्ति, हुए प्रकट तो शोर हुआ ।
जैनधर्म का बिगुल बजा तो, अतिशय चारों ओर हुआ ।।6।।

ऐसा अतिशय अब दिखला दो, विघ्न कष्ट दुख नाश करो।
दुनियाँ मोक्ष महल बन जाये, सबके दिल तुम वास करो॥
व्यसन बुराई पाप मिटें सब, दया अहिंसा महक उठें।
'सुव्रत' अपना धर्म समझ के, चंदा जैसे चमक उठें॥7॥

(दोहा)

छंद शब्द का ज्ञान ना, फिर भी भक्ति अथाह।
चन्द्रप्रभु को पूज हम, चलें मुक्ति की राह॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं...।

चन्द्रप्रभु स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शांतये शांतिधारा....।)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभु जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(ज्ञानोदय) (कषाय–मद)

जब औरों पर जोर चले ना, तभी क्रोध हम कर बैठे ।
गैर जले या नहीं जले पर, आप स्वयं हम जल बैठे ।।
क्रोध आग को क्षमा नीर दो, क्रूर क्रोध परिणाम हरो ।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो ।।1।।

ॐ ह्रीं परस्परक्रोध वैरविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्य...।

गुणियों का सम्मान न करना, यही मान का लक्षण है ।
वंश कंश रावण कौरव के, मिटे इसी से तत्क्षण हैं ।।
मान विजय को विनय सिखाओ, अक्कड़पन अभिमान हरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो ।।2।।

ॐ ह्रीं मानसिकरोगमानविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्य...।

वेद पुराणों शास्त्रों के यदि, ज्ञानी बनकर कुपथ चले ।
पढ़े लिखे वे मूरख जैसे, करें ज्ञानमद फूल चले ।।
भले रहें अज्ञानी लेकिन, हमें भक्ति का दान करो ।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो ।।3।।

ॐ ह्रीं बुद्धिविकारज्ञानमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्य.।

अपनी जय–जयकार प्रशंसा, मान प्रतिष्ठा पूजाएँ ।
सुनकर फूले भरे जोश से, पूजा मद वो कहलाएँ ।।
पूजा मद को जीत सकें हम, अपयश मद अपमान हरो ।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो ।।4।।

ॐ ह्रीं अपयशपूजामदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

वंश पिता दादा का वैभव, बढ़ा चढ़ा जो कुल पाना ।
सुना–सुनाकर उसकी बातें , अहंकार से भर जाना ।।
यही जीतने कुल–मद हमको, जिन–कुल का वरदान करो ।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो ।।5।।

ॐ ह्रीं क्लेशदायककुलमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

नाना, मामा, माँ का कुल जो, उच्च जाति को पा फूले ।
मोक्षमार्ग में नहीं लगा के, दर्प भरे मद में झूले ।।
यही जाति मद जीत सकें हम, ऐसा सम्यग्ज्ञान भरो ।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो ।।6।।

ॐ ह्रीं भेदभावजनकजातिमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

शौर्य पराक्रम ऐसा जिससे, कर्म शैल भी हर सकते ।
पर उससे आतंक किया तो, नरक सैर भी कर सकते ।।
नश्वर ऐसा बल–मद तजने, आत्मशक्ति का दान करो ।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो ।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तिहारक बलमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

कठिन साधना तूफानी कर, ऋद्धि प्राप्त कर मद करना।
तंत्र मंत्र जादू टोना कर, पाखंडी शिव पथ करना ॥
यही ऋद्धिमद त्याग सकें हम, मोक्षमार्ग का दान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो ॥8॥

ॐ ह्रीं कुमंत्रप्रभावहारक ऋद्धिमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

घोर तपस्या भाँति–भाँति की, करके खुद को बड़े कहें।
मुझ जैसा है कौन तपस्वी, तन शोषण कर खड़े रहें ॥
पतन द्वार ये तप मद हरने, हमरा भी कुछ ध्यान धरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो ॥9॥

ॐ ह्रीं पतनद्धारतपमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

अतिशय सुन्दर कामदेव सा, तन पाकर अभिमान करें ।
हँसी उड़ाएँ कुरुप जन की, खुद को श्रेष्ठ महान कहें ॥
यही रूप मद त्याग सकें यों, दान भेद विज्ञान करो ।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो ॥10॥

ॐ ह्रीं भेदविज्ञानहारक रूपमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

कपट करें विश्वास त्याग कर, कथनी करनी एक नहीं।
तन के उजले मन के काले, बगुला भक्ति नेक नहीं ॥
मुँह में राम बगल में छुर्री, जग माया के काम हरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे हमको भी गुणवान करो ॥11॥

ॐ ह्रीं कलंक मायाविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

तज संतोष लोभ लालच में, जीवन कितने गवाँ दिये।
लोभ पाप का बाप रहा ये, गुरु की वाणी भुला दिये॥
तृष्णा तृप्त हुई ना अपनी, संतोषामृत दान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥12॥

ॐ ह्रीं शान्तिहारक लोभविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

(12 अविरित त्याग)

पृथ्वीकायिक जीवों को हम, रोज रात–दिन सता रहे।
सोना चाँदी हीरा पत्थर, इनसे खुद को सजा रहे॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 13॥

ॐ ह्रीं पृथ्वीसम्बन्धीदुःखविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

ओस बर्फ जल–ओला कुहरा, इन्हें मारकर हम जीते।
जल जीवन है ऐसा कहके, इन्हें कष्ट दे जल पीते॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥14॥

ॐ ह्रीं जलसम्बन्धीसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

दीप ज्योति ज्वाला अंगारे, आग– अग्निकायिक हैं जो।
स्वार्थ सिद्धि को इन्हें मारते, निर्बल दीन हीन हैं वो॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥15॥

ॐ ह्रीं अग्निसम्बन्धीसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

पवन हवा कूलर पंखे से, मरें वायुकायिक सारे ।
श्वासों को लेने वाले सब, इन पर चला रहे आरे ।।
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो ।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो ।।16।।

ॐ ह्रीं वायुसम्बन्धीसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

पेड़ लता फल पत्ते पौधे, यही वनस्पतिकायिक हैं ।
अपने –सुख आसक्त इन्हीं के, बेदर्दी से मारक हैं ।।
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो ।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो ।।17।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिसम्बन्धीसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

जो होते दो–तीन–चार या, पंचेन्द्री को त्रस कहते ।
गैरों की खातिर ये प्राणी, पग–पग पल–पल दुख सहते।
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो ।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो ।।18।।

ॐ ह्रीं प्राणिमात्रसम्बन्धीसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

एक परस इन्द्री में फँसकर, हाथी प्राण गँवाते हैं ।
यश सम्मान इसी से घटते, जय करके सुख पाते हैं ।।
आठ तरह परसन जीतें यों, संयम दे उद्धार करों ।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो ।।19।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनदोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

पाँच तरह के भोजन के रस, सरगम के रस चखे सदा।
लाज नशाये युद्ध कराये, मछली इसमें फँसे सदा ॥
ऐसी रसना विजय करें यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो ॥20॥

ॐ ह्रीं रसनादोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

जो दुर्गंध सुगंध को सूँघे, वही घ्राण इन्द्रिय होती।
इसमें जो आसक्त हुये तो, भौंरे जैसी गति होती ॥
ऐसी इन्द्रिय घ्राण विजय को, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो ॥21॥

ॐ ह्रीं नासिकादोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

नीला पीला श्याम श्वेत या, लाल रंग जो बतलाती।
मरे पतंगा जिससे वो ही, चक्षु इन्द्री कहलाती ॥
ऐसी इन्द्री चक्षु जय को, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो ॥22॥

ॐ ह्रीं दृष्टिदोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

सा रे गा मा पा धा नी जो, सुने सात सुन कान वही।
साँप हिरण इसमें फँस मरते, आत्म गीत का ज्ञान नहीं ॥
ऐसी इन्द्री श्रोत्र विजय को, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो ॥23॥

ॐ ह्रीं श्रुतदोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

सीधी सादी सभी इन्द्रियाँ टेढे–मेढे मन–दादा।
राग –द्वेष कर जग भटकाते, करते दुखी बहुत ज्यादा।।
करें नपुंसक मनपर जय यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो।।24।।

ॐ ह्रीं समस्त हृदयरोगविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

पूर्णार्घ्य

नाथ आप सब कुछ जानो पर, तुम्हें कोई न जान सके।
सबके रक्षक पालन कर्त्ता, तुम्हें कौन पहचान सके।।
फिर भी उत्तम वे बनते जो, शीश झुका सम्मान करें ।
पूज्य गुणों के गौरव बनते, जो तेरा गुणगान करें।।

(दोहा)

चन्द्रपुरी के चन्द्र को, सविनय टेकें शीश।
अर्घ्य समर्पण हम करें, मिले शांति आशीष।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं....।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

अंध–बंधमय लोक को, दिये दृष्टि जिनराज।
ऐसे चन्द्र जिनेश जी, करिये दिल पर राज।।

(ज्ञानोदय)

अष्टम तीर्थंकर जो जग में, चन्द्रप्रभु भगवान् रहे ।
अष्ट कर्म को हरने वाले, भक्तों की वे शान रहे ॥
अतिशयकारी अतिशयधारी, उनकी महिमा हम गायें ॥
स्वर्ग सुखों में क्या रक्खा है, मोक्ष धर्म हम अपनाएँ ॥1॥

पहले भव में श्रीवर्मा जो, चार स्वप्न दे जन्म लिए ।
जो जिनवर से तत्त्व ज्ञान ले, दीक्षा ले भव धन्य किए ॥
फिर संन्यास मरण अपना के, पहले स्वर्ग सुरेश हुए ।
स्वर्ग त्याग फिर आठ स्वप्न दे, अजितसेन चक्रेश हुए ॥2॥

फिर चक्री तप धार मरणकर, सोलहवे सुर रूप हुए ।
सपना दे फिर स्वर्ग त्यागकर, पद्मनाभ सुत भूप हुए ॥
पद्मनाथ वैराग्य धारकर, चउ आराधन संग लिये ।
सोलहकारण भाय भावना, तीर्थंकर पद बंध किये ॥3॥

अन्त समय कर मरण समाधी, वैजयन्त सुर इन्द्र हुए ।
फिर सोलह सपने देकर के, चन्द्रपुरी के चन्द्र हुए ॥
शुक्ल वर्ण में शुक्ल भाव में, बनकर राजा राज्य किया ।
सब कुछ नश्वर जान समझ के, मोक्षमार्ग वैराग्य लिया ॥4॥

घाति कर्म हर हुए केवली, अष्टकर्म हर सिद्ध बने ।
ताराओं के बीच चाँद ज्यों, ऐसे जगत् प्रसिद्ध बने ।।
नाथ! आप ने सात–सात भव, कठिन तपस्या धारण की ।
तब जाके सब कर्म नाश कर, मोक्ष सम्पदा वारण की ।।5।।
हमें तपस्या से डर लगता, मोक्षमार्ग ना धर्म रुचे ।
फिर कैसे भव तीर मिलेगा, कैसे जग में लाज बचे ।।
भाग्य हमारा बिगड़ न जावे, ऐसी ज्योति जला दीजे ।
सागर की लहरों जैसे ही, हमको भी अपना लीजे ।।6।।
सब पर तुम करुणा बरसाते, हम पर भी बरसाओ ना ।
सूर्य चाँद जो कर न सकें वो, ज्ञान प्रकाश दिलाओ ना ।।
चाँद राहु से होता दागी, किन्तु आप बे–दाग रहे ।
'सुव्रत' की अब अर्जी सुन लो, जो शिव सुख को माँग रहें ।।7।।

(दोहा)

सार्थक चन्दा नाम है, हमको करो निहाल ।
सादर हम सब गा रहे, चरणों की जयमाल ।।
स्वार्थ रहित है प्रार्थना, आश रहित गुणगान ।
मनोकामना पूर्ण हो, मिले यही वरदान ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा ।

चन्द्रप्रभ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इतिश्री चन्द्रप्रभविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

नगर 'बिलहरा' में हुआ, पावन पावस पर्व।
जहाँ मूलनायक रहे, चन्द्रप्रभु पद –सर्व॥
चन्द्रप्रभु की छाँव में, चन्द्रप्रभु विधान।
'विद्यागुरु' पद ध्यान कर, पद्मसिन्धु सम्मान॥
दो हजार सन! दस रहा, शरद पूर्णिमा योग।
'मुनिसुव्रत सागर' रचे, भूल तजें भवि लोग॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(तर्ज : करें भगत् हो आरती)

चन्द्रप्रभु की आरती करो झूम –झूम के 2
झूम –झूम के....4
महासेन माँ –लक्ष्मणा के सुत न्यारे,
चन्द्रपुरी के लाल चन्द्रमा से प्यारे ।
सबके नाथ तुम्हें हम पूजें झूम–झूम के 2
चन्द्रप्रभु की आरती....।।

ललितकूट सम्मेदशिखर खड्गासन से,
मोक्ष पधारे अष्ट कर्म के नाशन से ।
शरणा दे दो नाथ आए हम घूम–घूम के 2
चन्द्रप्रभु की आरती....।।

आप जगत् में साँचे हो हीरे मोती,
सूर्य चाँद से तेज आपकी है ज्योति ।
नाम सुनत ही भक्त नाचते झूम–झूम के 2
चन्द्रप्रभु की आरती

जगह –जगह पर अतिशय खूब तुम्हारा है,
समंतभद्र को चमत्कार कर तारा है ।
भूत पिशाच भगे चंदा नाम सुन–सुन के 2
चन्द्रप्रभु की आरती....।।

नाथ! आपकी कृपा दशहरा दीवाली,
चरण धूल सब दुख संकट हरने वाली ।
'सुव्रत' पा वरदान रहें हम झूम–झूम के 2
चन्द्रप्रभु की आरती....।

चन्द्रप्रभ चालीसा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करुं प्रणाम ।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम ॥
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मंदिर सुखकार ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, मन मन्दिर में धार ॥

चौपाई

जय–जय स्वामी श्री जिन चन्द्रा, तुमको निरख भये आनन्दा।
तुम ही प्रभु देवन के देवा, करूं तुम्हारे पद की सेवा ॥
वेष दिगम्बर कहलाता है, सब जग के मन भाता है ।
नाशा पर है दृष्टि तुम्हारी, मोहनि मूरति कितनी प्यारी ॥
तीन लोक की बातें जानो, तीन काल क्षण में पहचानो ।
नाम तुम्हारा कितना प्यारा, भूत प्रेत सब करें निवारा ॥
तुम जग में सर्वज्ञ कहाओ अष्टम तीर्थकर कहलाओ ।
महासेन जो पिता तुम्हारे, लक्ष्मणा के दिल के प्यारे ।
तज वैजंत विमान सिधाये, लक्ष्मणा के उर में आये ।
पोष वदी एकादश नामी, जन्म लिया चन्दा प्रभु स्वामी ॥
मुनि समन्तभद्र थे स्वामी, उन्हें भस्म व्याधि बीमारी ।
वैष्णव धर्म जभी अपनाया, अपने को पण्डित कहाया ॥

कहा राव से बात बताऊँ, महादेव को भोग खिलाऊँ ।
प्रतिदिन उत्तम भोजन आवे, उनको मुनि छिपाकर खावे ।।
इसी तरह निज रोग भगाया, बन गई कंचन जैसी काया ।
इक लड़के ने पता चलाया, फोरन राजा को बतलाया ।।
तब राजा फरमाया मुनि को, नमस्कार करो शिवपिंडी को ।
राज से तब मुनि जी बोले, नमस्कार पिंडी नहिं झेले ।।
राजा ने जंजीर मंगाई, उस शिवपिंडी में बंधवाई ।।
मुनि ने स्वंयभू पाठ बनाया, पिंडी फटी अचम्भा छाया ।।
चन्द्रप्रभ की मूर्ति दिखाई, सब ने जय– जयकार मनाई ।
नगर फिरोजाबाद कहाये, पास नगर चन्दवार बताये ।।
चन्द्रसैन राजा कहलाया, उस पर दुश्मन चढकर आया ।
राव तुम्हारी स्तुति गाई, सब फौजों को मार भगाई ।।
दुश्मन को मालूम हो जावे, नगर घेरने फिर आ जावे ।
प्रतिमा जमना में पधराई, नगर छोड़कर परजा धाई ।।
बहुत समय ही बीता है कि, एक यती को सपना दीखा ।
बड़े जतन से प्रतिमा पाई, मंदिर में लाकर पधराई ।।
वैष्णवों ने चाल चलाई, प्रतिमा लक्ष्मण की बतलाई ।
अब तो जैनी जन घबरावें, चन्द्र प्रभु की मूर्ति बतावें ।।

सिंह चन्द्रमा का बतलाया, तब स्वामी तुमको था पाया।
सोनागिरि में सौ मन्दिर हैं, एक से बढ़कर एक सुन्दर हैं॥
समवशरण था यहाँ पर आया, चन्द्र प्रभु उपदेश सुनाया।
चन्द्रप्रभु का मंदिर भारी, जिसको पूजे सब नर–नारी॥
सात हाथ की मूर्तिबताई, लाल रंग प्रतिमा बतलाई।
मंदिर और बहुत बतलाये, शोभा वरणत पार न पाये॥
पार करो मेरी यह नैया, तुम बिन कोई नहीं खिवैया।
प्रभु मैं तुमसे कुछ न हीं चाहूँ, भव–भव में दर्शन पाऊँ॥
मैं हूं स्वामी दास तिहारा, करो नाथ अब तो निस्तारा।
स्वामी आप दया दिखलाओ, चन्द्रदास को चन्द्र बनाओ।

सोरठा

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, अहिक्षेत्र में आय के॥
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जग में चले॥

जाप मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः

चंद्र कलंकित, किन्तु हो, चन्द्र प्रभु अकलंक।
वह तो शंकित केतु से, शंकर तुम निःशंक॥
रंक बना हूं मम अतः, मेटो मनका पंक।
जाप जपूँ जिन– नाम का, बैठ सदा पर्यंक॥8॥